



महिला सशक्तिकरण पर महात्मा गांधी के विचारों पर एक अध्ययन

मेघा श्रीवास्तव^{1*}, डॉ. नीतू मोर्य²

1. शोधार्थी, राजकीय स्नाकोत्तर महाविद्यालय मुसाफिरखाना, अमेठी (उत्तर प्रदेश), भारत

meghasrivastava037@gmail.com ,

2. असिस्टेंट प्रोफेसर, राजकीय स्नाकोत्तर महाविद्यालय मुसाफिरखाना, अमेठी (उत्तर प्रदेश), भारत

सारांश: महात्मा गांधी का महिला सशक्तिकरण के प्रति दृष्टिकोण उनके संपूर्ण समाज सुधार और स्वतंत्रता संग्राम के प्रयासों का एक अभिन्न हिस्सा था। उनका मानना था कि महिलाओं को समान अधिकार, स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता प्रदान किए बिना समाज का नैतिक और आध्यात्मिक उत्थान संभव नहीं है। इस अध्ययन में गांधीजी के विचारों का विश्लेषण कर उनके दृष्टिकोण की प्रासंगिकता का मूल्यांकन किया गया है।

मुख्य शब्द: महिला सशक्तिकरण, महात्मा गांधी, शिक्षा

----- X -----

परिचय

सशक्तिकरण का अर्थ है किसी व्यक्ति की क्षमता को इस तरह से मजबूत करना कि वह सोचने, निर्णय लेने और स्वायत्त तरीके से कार्य करने के लिए पर्याप्त शक्तिशाली महसूस करे। यह व्यक्ति को संसाधनों तक पहुँचने और पारंपरिक विचारधारा को बदलने के लिए बाहरी बाधाओं को दूर करने के लिए आश्वस्त करता है। आधुनिक समय में महिलाओं का सशक्तिकरण एक बहुत चर्चित विषय बन गया है, लेकिन इस विचार को हमारे राष्ट्रपिता ने 20वीं सदी के पूर्वार्ध में प्रचारित किया था। इससे पता चलता है कि वे सच्चे समाज सुधारक थे और अपने समय से बहुत आगे थे। महात्मा गांधी ने महसूस किया कि महिलाओं को उन रीति-रिवाजों और कानूनों के नाम पर दबाया गया है, जिनके लिए पुरुष जिम्मेदार हैं और जिनमें महिलाओं की कोई भूमिका नहीं है। पुरुषों और महिलाओं के बीच परामर्श के माध्यम से नियम और कानून बनाए जाने चाहिए। महात्मा गांधी एक महान समाज सुधारक थे जिन्होंने परंपरा के इशारे पर महिलाओं द्वारा अपनाई जाने वाली पुरानी प्रथाओं सहित सामाजिक बुराइयों को मिटाने का प्रयास किया। गांधीजी के शब्दों में "महिलाओं को कमजोर लिंग कहना अपमान है; यह महिलाओं के प्रति पुरुषों का अन्याय है"। यह आलेख महिलाओं और उनके उत्थान पर महात्मा गांधी के विचारों की आधुनिकता पर प्रकाश डालता है और यह दर्शाता है कि कैसे उनके विचार अपने समय से आगे थे।

भूमिका महिला सशक्तिकरण भारतीय समाज के विकास में एक महत्वपूर्ण पहलू है। महात्मा गांधी ने महिलाओं की स्वतंत्रता, समानता और आत्मनिर्भरता पर विशेष जोर दिया। उनके विचार न केवल महिलाओं की सामाजिक स्थिति को सुधारने में सहायक रहे, बल्कि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में भी महिलाओं की सक्रिय भागीदारी को प्रेरित किया। यह अध्ययन गांधीजी के महिला सशक्तिकरण संबंधी विचारों को विस्तार से प्रस्तुत करता है।

महात्मा गांधी और महिलाओं की स्वतंत्रता महात्मा गांधी का मानना था कि महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त होने चाहिए। उन्होंने कहा था कि जब तक महिलाओं को समान अधिकार नहीं मिलते, तब तक समाज का संपूर्ण विकास संभव नहीं है। उन्होंने महिलाओं को शिक्षा, आर्थिक स्वतंत्रता और आत्मरक्षा की ओर प्रेरित किया। उनके विचारों का प्रभाव देशभर में महिला जागरूकता अभियानों के रूप में देखा गया।

गांधीजी के महिला सशक्तिकरण संबंधी प्रमुख विचार

शिक्षा का अधिकार - गांधीजी मानते थे कि महिलाओं की शिक्षा समाज में क्रांतिकारी परिवर्तन ला सकती है। उन्होंने बालिकाओं की शिक्षा को प्राथमिकता देने पर बल दिया।

आर्थिक स्वतंत्रता - गांधीजी ने महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए विभिन्न कुटीर उद्योगों को अपनाने की सलाह दी। उन्होंने महिलाओं को चरखा चलाने और हस्तकला से जुड़ने के लिए प्रेरित किया।

सामाजिक समानता - उन्होंने कहा कि महिलाओं को समान अधिकार मिलना चाहिए और उन्हें किसी भी प्रकार के भेदभाव का सामना नहीं करना चाहिए। वे समाज में समानता के पक्षधर थे।

सती प्रथा एवं दहेज प्रथा का विरोध - गांधीजी ने सती प्रथा, बाल विवाह और दहेज प्रथा जैसी कुप्रथाओं का खुलकर विरोध किया। उन्होंने महिलाओं को इन बुराइयों के खिलाफ आवाज उठाने के लिए प्रेरित किया।

राजनीति में भागीदारी - गांधीजी ने महिलाओं को स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि महिलाएं केवल घर तक सीमित न रहें, बल्कि राजनीति और समाज सेवा में भी योगदान दें।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका महात्मा गांधी के विचारों से प्रेरित होकर हजारों महिलाओं ने स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया। कस्तूरबा गांधी, सरोजिनी नायडू, अरुणा आसफ अली, सुचेता कृपलानी जैसी अनेक महिलाओं ने स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। गांधीजी के नेतृत्व में महिलाओं ने सत्याग्रह, असहयोग आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया।

अध्ययन के उद्देश्य

1. गांधीजी के महिला सशक्तिकरण संबंधी विचारों का अध्ययन।
2. उनके विचारों की ऐतिहासिक और सामाजिक पृष्ठभूमि का विश्लेषण।
3. गांधीजी के विचारों की आधुनिक समाज में प्रासंगिकता का मूल्यांकन।

अनुसंधान पद्धति

इस अध्ययन में **गुणात्मक अनुसंधान पद्धति (Qualitative Research Methodology)** का उपयोग किया गया है। महात्मा गांधी द्वारा लिखित और प्रकाशित ग्रंथ, जैसे *हिंद स्वराज*, *यंग इंडिया* और *हरिजन*। गांधीजी के जीवन और कार्यों पर आधारित पुस्तकें, लेख, और शोध पत्र का उपयोग किया गया है। विषय-आधारित विश्लेषण (Thematic Analysis) का उपयोग करते हुए गांधीजी के विचारों और उनकी प्रासंगिकता को समझा गया।

महिला सशक्तिकरण पर गांधीजी

महात्मा गांधी ने अपने विचार व्यक्त किए थे और ऐसे कई मुद्दों पर लिखा था जो विशेष रूप से भारतीय समाज और सामान्य रूप से मानवता से संबंधित थे। यह लेख उन मुद्दों पर उनके विचारों के महत्व और प्रासंगिकता की जांच करता है जो भारत में महिलाओं की स्थिति को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। निम्नलिखित मुद्दों पर विचार किया जा रहा है:

लिंग समानता - गांधीजी मानते थे कि महिलाओं और पुरुषों को समान अधिकार मिलने चाहिए। उन्होंने समाज में महिलाओं के साथ किसी भी प्रकार के भेदभाव का विरोध किया।

विवाह - गांधीजी विवाह को दो आत्माओं के पवित्र मिलन के रूप में देखते थे, न कि एक सामाजिक बंधन के रूप में। उन्होंने विवाह में समानता और पारस्परिक सम्मान की वकालत की।

पर्दा प्रथा - गांधीजी पर्दा प्रथा के घोर विरोधी थे। उनका मानना था कि यह महिलाओं के विकास में बाधक है और इसे समाप्त किया जाना चाहिए।

दहेज प्रथा - गांधीजी ने दहेज प्रथा को समाज के लिए अभिशाप बताया और इसे उन्मूलन करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने विवाह को आर्थिक बोझ से मुक्त करने की वकालत की।

विधवा पुनर्विवाह - गांधीजी विधवा पुनर्विवाह के समर्थक थे। उन्होंने इसे महिलाओं के अधिकारों और समाज में उनके पुनः एकीकरण के लिए आवश्यक बताया।

तलाक - गांधीजी तलाक को अंतिम उपाय के रूप में देखते थे, लेकिन उन्होंने यह भी माना कि यदि विवाह असफल हो जाता है तो महिलाओं को स्वतंत्र रूप से अपने निर्णय लेने का अधिकार होना चाहिए।

महिलाओं का सम्मान - गांधीजी का मानना था कि समाज की प्रगति महिलाओं के सम्मान और सुरक्षा पर निर्भर करती है। उन्होंने महिलाओं के प्रति हिंसा और अन्याय का विरोध किया।

शिक्षा और सह-शिक्षा - गांधीजी महिलाओं की शिक्षा के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने सह-शिक्षा को भी बढ़ावा दिया ताकि महिलाओं और पुरुषों के

बीच समानता स्थापित की जा सके।

जन्म नियंत्रण - गांधीजी ने परिवार नियोजन के नैतिक और सामाजिक पक्षों पर विचार किया और महिलाओं को अपने स्वास्थ्य और परिवार के आकार के बारे में निर्णय लेने का अधिकार देने की वकालत की।

नसबंदी - गांधीजी ने नैतिकता और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के आधार पर अनिवार्य नसबंदी का विरोध किया, लेकिन उन्होंने स्वेच्छा से अपनाई जाने वाली विधियों का समर्थन किया।

महात्मा गांधी के विचारों से प्रेरित होकर हजारों महिलाओं ने स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया। कस्तूरबा गांधी, सरोजिनी नायडू, अरुणा आसफ अली, सुचेता कृपलानी जैसी अनेक महिलाओं ने स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। गांधीजी के नेतृत्व में महिलाओं ने सत्याग्रह, असहयोग आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया।

महात्मा गांधी का महिला सशक्तिकरण के प्रति दृष्टिकोण प्रगतिशील और क्रांतिकारी था। उन्होंने महिलाओं को आत्मनिर्भर, शिक्षित और सशक्त बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनके विचार आज भी प्रासंगिक हैं और महिलाओं की स्वतंत्रता और समानता के लिए प्रेरणा स्रोत बने हुए हैं। गांधीजी के विचारों को अपनाकर समाज महिलाओं को अधिक अवसर और समान अधिकार प्रदान कर सकता है, जिससे एक समतावादी और विकसित समाज की स्थापना संभव हो सकेगी।

महिला सशक्तिकरण पर महात्मा गांधी के विचार और वर्तमान परिदृश्य

सशक्तिकरण से हमारा तात्पर्य है '...अधिक मजबूत और अधिक आत्मविश्वासी बनने की प्रक्रिया, विशेष रूप से अपने जीवन को नियंत्रित करने और अपने अधिकारों का दावा करने में...' (en.oxforddictionaries.com)। महिला सशक्तिकरण का अर्थ है एक ऐसी व्यवस्था विकसित करना, जहाँ महिलाएँ समाज के विकास में योगदान दें और राजनीतिक वातावरण ऐसा हो कि वे शोषण, आशंका और उत्पीड़न के बिना मौजूद रहें और फलें-फूलें (पांडा, 2017)। भारत की महिलाओं को सशक्त बनाने का अर्थ है - निर्णय लेने में समानता और लिंग के बावजूद अपने जीवन को नियंत्रित करने की क्षमता। महात्मा गांधी महिला उदारीकरण और सशक्तिकरण के समर्थक थे और लैंगिक समानता के कट्टर समर्थक थे। एक सामाजिक और राजनीतिक सुधारक के रूप में, महात्मा गांधी ने महिलाओं से संबंधित सदियों पुरानी सामाजिक बुराइयों को मिटाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। एक सामाजिक आंदोलनकारी के रूप में, वे समाज को सुव्यवस्थित करना चाहते थे और भारत को विश्व परिदृश्य में सक्षम बनाना चाहते थे, लेकिन उनका सपना तब तक पूरा नहीं हो सकता जब तक कि सात दशक बाद भी पचास प्रतिशत महिला आबादी दबी-कुचली न रह जाए। वर्तमान में, भारतीय सकल घरेलू उत्पाद में भारतीय महिलाओं का योगदान मात्र 17 प्रतिशत है, जो वैश्विक औसत योगदान के आधे से भी कम है, जो कि 37 प्रतिशत है (खेतरपाल, 2017)।

महिलाओं पर महात्मा गांधी के विचार

महात्मा गांधी ने बीसवीं सदी के पूर्वार्ध में महिलाओं की स्थिति में क्रांतिकारी बदलाव लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे मानवता के उदारीकरण और सर्वांगीण विकास में विश्वास करते थे, जो भारतीय महिलाओं की मुक्ति के बिना संभव नहीं था, जो कि सामाजिक जीवन के विभिन्न पहलुओं से समाज का सबसे दबा हुआ और उत्पीड़ित वर्ग था और आज भी है (गराई, 2015)। गांधीजी ने हमेशा महिला उत्थान पर जोर दिया, क्योंकि वे भारत के भावी नागरिकों के लिए जिम्मेदार वर्ग का गठन करती हैं। यह महात्मा गांधी की मां 'पुतलीबाई' ही थीं, जिन्होंने अवचेतन रूप से गांधी के लिए महिलाओं की छवि 'अर्धगनी' या बेहतर आधी और 'सदाधर्मिनी' या सहायक के रूप में बनाई। गांधी के अनुसार, महिलाएँ नैतिकता और आध्यात्मिकता के आधार पर पुरुषों से श्रेष्ठ हैं (मंडल)। गांधी जी का दृढ़ विश्वास था कि देश की राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक मुक्ति में महिलाओं की भूमिका बड़ी है। गांधी जी को महिलाओं में अहिंसा के प्रति जन्मजात क्षमता पर बहुत विश्वास था (एसएआईएन, 2016)। इसलिए भारतीय स्वतंत्रता के लिए गांधी जी के संघर्ष की शुरुआत से ही गांधी जी ने भारतीय महिलाओं से स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल होने का जोरदार आग्रह किया। इसलिए गैर-निगम आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी बहुत बड़ी थी और उन्होंने 'खादी' (मंडल) के प्रचार में उल्लेखनीय भूमिका निभाई।

भारत में महिलाओं की वर्तमान स्थिति

ऋग्वेदिक काल में महिलाओं की स्थिति उत्तर वैदिक भारत में और भी खराब हो गई (संदीप, 2018)। तब से, महिलाओं को पुनर्विवाह करने, शिक्षा प्राप्त करने और पैतृक संपत्ति में उत्तराधिकार प्राप्त करने की अनुमति नहीं थी। स्थिति को और भी खराब करने के लिए, दहेज प्रथा, बाल विवाह और 'सती प्रथा' को भी समाज में शामिल किया गया। स्वतंत्रता से पहले और बाद में, महिलाओं के खिलाफ इन अपमानजनक प्रथाओं को खत्म करने के लिए कई सुधारक आगे आए। स्वतंत्रता के बाद, महिलाओं को दबाने वाली प्रथाओं को खत्म करने और रोकने के लिए कानून बनाए गए। वर्तमान में, सुधारकों और सरकारी नीतियों और नियमों के प्रयासों के कारण स्थिति में सुधार हुआ है, लेकिन फिर भी परिणाम उम्मीदों से बहुत

पीछे हैं। प्रणव दुआ के लेख के अनुसार, स्वतंत्र भारत में महिलाओं की स्थिति स्वतंत्रता से पहले की तुलना में अधिक सम्मानजनक है। उनके अनुसार विज्ञान और प्रौद्योगिकी में विकास, शिक्षा का प्रसार, सामाजिक-राजनीतिक आंदोलन, आधुनिकीकरण आदि ने महिलाओं के प्रति लोगों के दृष्टिकोण को बदल दिया है। बाल विवाह, सती प्रथा, विधवाओं का शोषण, देवदासी प्रथा, पर्दा प्रथा जैसे कुछ मुद्दे लगभग गायब हो गए हैं, जिससे महिलाओं का मनोबल और आत्मविश्वास बढ़ा है (प्रणव दुआ)। यह एक हद तक सच हो सकता है लेकिन आर्थिक रूप से महिलाओं की स्थिति महिला सशक्तिकरण के वास्तविक सार से काफी दूर है। संविधान की प्रस्तावना में उल्लिखित समानता और न्याय प्राप्त करने में हम अभी भी मीलों पीछे हैं। केवल छह प्रतिशत स्टार्ट-अप महिलाओं द्वारा चलाए जाते हैं (कुमार, 2017)। भारत का लिंगानुपात अत्यधिक असंगत है जिसमें महिला आबादी पुरुषों से कम है। जनगणना 2011 के अनुसार, लिंगानुपात प्रति 1000 पुरुषों पर 940 महिलाएँ हैं, हालाँकि यह जनगणना 2001 से बेहतर है जहाँ महिलाएँ प्रति 1000 पुरुषों पर 933 थीं (census2011.co.in)। महिला शिक्षा पर महात्मा गांधी का दृष्टिकोण इस तथ्य के प्रकाश में और अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है कि भारत में महिलाओं की साक्षरता दर 65.46 प्रतिशत है जबकि पुरुषों की साक्षरता दर 82.14 प्रतिशत है (www.census2011.co.in)। भारत की स्कूली शिक्षा प्रणाली अपने पड़ोसी देशों पाकिस्तान, नेपाल और बांग्लादेश (बंसल, 2016) की तुलना में गुणवत्ता के मामले में कमतर प्रदर्शन कर रही है। यौन अपराध, अनुचित वेतन समानता, बाहरी कामकाजी नैतिकता और सामाजिक भेदभाव कुछ ऐसे कारण हैं जो महिलाओं को आर्थिक विकास में भाग लेने से रोकते हैं (कुमार, 2017)।

गांधीवादी सिद्धांत और स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महिला सशक्तिकरण

सर्वोदय का अर्थ है 'सबका विकास'। आदिवासी गांवों में मदद या संगत की व्यवस्था है जिसका शाब्दिक अर्थ है 'सहयोग'। गांधीजी की विकास की अवधारणा अंत्योदय के माध्यम से सर्वोदय है, जिसका अर्थ है समाज के सबसे कमजोर व्यक्ति के माध्यम से सभी का कल्याण। सहयोग और सामूहिक प्रयास के सिद्धांत समाज के लिए केंद्रीय हैं। "ट्रस्टीशिप" का अर्थ है कि संपत्ति सभी की है, और धारक इसका प्रबंधन करता है और केवल एक सामाजिक रूप से जिम्मेदार ट्रस्टी के रूप में इसकी देखभाल करता है। गांधीवादी मॉडल गांव से शुरू होकर उच्चतम स्तर तक सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक प्रणालियों के विकेंद्रीकरण पर जोर देता है। गांव के जीवन में सहयोग और भाईचारे की भावना पैदा होनी चाहिए।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर लाखों लोगों की चुप्पी को आवाज देते हुए, भारत की पूर्व प्रथम महिला उषा नारायणन ने दुख जताया कि असमान विकास ने ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकांश महिलाओं को अछूता, अनसुना और उपेक्षित छोड़ दिया है। उन्होंने कहा कि महिलाओं को बैसाखी या किसी मदद की जरूरत नहीं है, बल्कि उन्हें समाज में अपना उचित स्थान लेने के लिए सशक्त बनाने की जरूरत है (प्रभाकर, 2004)। पुरुषों और महिलाओं के लिए समान अधिकारों और विशेषाधिकारों की संवैधानिक गारंटी के बावजूद, महिलाएं समाज का सबसे वंचित और लंबे समय से उपेक्षित वर्ग बनी हुई हैं। विकास निवेश पर सामाजिक लाभ को अधिकतम करने और वर्तमान और अगली पीढ़ी की गरीबी को कम करने के लिए गरीबी-विरोधी नीतियों को गरीब महिलाओं तक पहुंचने की जरूरत है (ललिता, 1999 और नरसैया, 2004)।

सशक्तिकरण की अवधारणा

सशक्तिकरण का अर्थ है लोगों को विशेष रूप से महिलाओं को शक्ति संसाधन प्राप्त करने और रखने में सक्षम बनाना ताकि वे स्वयं निर्णय ले सकें या दूसरों द्वारा लिए गए उन निर्णयों का विरोध कर सकें जो उन्हें प्रभावित करते हैं। सशक्तिकरण की प्रक्रिया में संसाधनों पर भागीदारी और नियंत्रण को महत्वपूर्ण संकेतक माना जाता है। वंचित महिलाओं के पास विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में संसाधनों का सबसे कम अनुपात होता है और परिणामस्वरूप वे शक्तिहीन होती हैं और शक्तिशाली लोगों पर निर्भर होती हैं। ऐतिहासिक रूप से, ऋण की पहुँच और शर्तों ने महिलाओं के साथ भेदभाव किया है (मणिमेकलाई, 1999) कई कारणों से जैसे कि संपार्श्विक प्रदान करने में असमर्थता, छोटे आकार के ऋण, बैंकों की औपचारिकताओं के लिए उच्च लेनदेन लागत।

महिला स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से माइक्रोफाइनेंस गरीबी उन्मूलन और महिलाओं के सशक्तिकरण का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। विभिन्न स्थानों पर महिलाओं द्वारा गठित SHG ने साबित कर दिया है कि वे वास्तव में ग्रामीण क्षेत्रों में बहुत रूढ़िवादी और परंपरा से बंधी अशिक्षित महिलाओं की मानसिकता में बदलाव ला सकते हैं।

समूह गठन की अवधारणा महिलाओं को जागरूक करने और स्वरोजगार के लिए आवश्यक मानसिक साहस प्रदान करने की सबसे अच्छी रणनीति है। महिलाओं के समूहीकरण ने उनकी जागरूकता बढ़ाई है और बिचौलियों द्वारा शोषण की संभावना कम की है।

सतत विकास के लिए महिलाओं का सशक्तिकरण आवश्यक है। सशक्तिकरण महिलाओं की अपनी समस्याओं की पहचान करने के लिए आत्मनिर्भरता विकसित करने की क्षमता को बढ़ा रहा है। यह एकजुटता और सामूहिक कार्यवाई पर जोर देता है। समूह या समुदाय नीतियों और निर्णय लेने वाले क्षेत्रों तक पहुँच प्राप्त करने के लिए एक साथ काम करते हैं जहाँ उनके जीवन की गुणवत्ता निर्धारित होती है। विकास सशक्तिकरण की एक प्रक्रिया है।

• गांधीवादी सिद्धांत और स्वयं सहायता असबाब के माध्यम से महिला लोकतंत्र

सर्वोदय का अर्थ है 'सबका विकास'। जशन में मदद या संगति की व्यवस्था है जिसका अर्थ है 'सहयोग'। गांधीजी के विकास की अवधारणा अंत्योदय के माध्यम से सर्वोदय है, जिसका अर्थ समाज के माध्यम से सभी का कल्याण है। सहयोग और सामूहिक प्रयास के सिद्धांत समाज के लिए केंद्र हैं। "ट्रस्टीशिप" का अर्थ है कि सभी संपत्ति का मालिक है, और मालिक इसका प्रबंधन करता है और केवल एक सामाजिक रूप से जिम्मेदार ट्रस्टी के रूप में इसकी देखभाल करता है। गांधीवादी मॉडल गांव से सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक विकेंद्रीकरण तक के सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक विकेंद्रीकरण पर जोर दिया जाता है। गाँव के जीवन में सहयोग और भाईचारे की भावना पैदा होनी चाहिए।

महिला दिवस पर लाखों लोगों की शैलियां को आवाज देते हुए, भारत की पूर्व प्रथम महिला उषा नारायणन ने दुख इंटरनेशनल कि भर्ती विकास में ग्रामीण इलाकों में ज्यादातर महिलाओं को दशमा, अनसुना और उपेक्षित छोड़ दिया है। उन्होंने कहा कि महिलाओं को बैसाखी या किसी मदद की जरूरत नहीं है, बल्कि उन्हें समाज में अपना स्थान लेने के लिए सिगरेट बनाने की जरूरत है (प्रभाकर, 2004)। पुरुषों और महिलाओं के लिए समान अधिकार और विशेषाधिकारों की संवैधानिक संस्थाओं के बावजूद, महिला समाज का सबसे प्रचलित और लंबे समय से उपेक्षित वर्ग बना हुआ है। विकास निवेश पर सामाजिक लाभ को अधिकतम करना और वर्तमान और अगली पीढ़ी की गरीबी को कम करना है, गरीबी-विरोधी सहयोग को गरीब महिलाओं तक पहुंचाना आवश्यक है (ललिता, 1999 और नरसैया, 2004)।

• भक्ति की अवधारणा

फार्मासिस्ट का अर्थ है लोगों द्वारा विशेष रूप से महिलाओं को शक्ति संसाधन प्राप्त करना और बनाए रखना, ताकि वे स्वयं निर्णय लेकर अस्तित्व में रह सकें या उनके द्वारा लिए गए निर्णयों का विरोध कर सकें, जिससे वे प्रभावित हो सकें। संप्रदाय की प्रक्रिया में शामिल होना और महत्वपूर्ण भूमिका निभाना शामिल माना जाता है। प्रधानमंत्री महिलाओं के पास विशेष रूप से ग्रामीण इलाकों में का अनुपात सबसे कम होता है और परिणामस्वरूप वे शक्तिहीन होते हैं और शक्तिशाली लोगों पर वर्जित होते हैं। ऐतिहासिक रूप से, ऋण की पहुंच और अभावग्रस्त महिलाओं के साथ भेदभाव किया जाता है (मैनीमेकलाई, 1999) कई लक्षण से जैसे कि संपार्श्विक प्रदान करने में असमर्थता, छोटे आकार के ऋण, विकलांगता के अभाव में महिलाओं के साथ भेदभाव किया जाता है।

महिला स्वयं सहायता समुदाय से महिलाओं के लिए अवैयक्तिकता का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। विभिन्न स्थानों पर महिलाओं द्वारा थोक एसएचजी ने साबित किया है कि वे वास्तव में ग्रामीण इलाकों में बहुत रुढ़िवादी और परंपरा से बंधी अशिक्षित महिलाओं की साख में बदलाव ला सकते हैं। समूह गठन की अवधारणा महिलाओं को वैज्ञानिक बनाने और समूह बनाने के लिए मानसिक साहस प्रदान करने की सबसे अच्छी रणनीति की आवश्यकता है। महिलाओं के समूहीकरण ने उनकी जागरूकता को बढ़ावा दिया है और बिचौलियों द्वारा शोषण की संभावना कम है।

सतत विकास के लिए महिलाओं का संविधान आवश्यक है। धार्मिक महिलाओं की अपनी चुनौतियों को पहचानने के लिए आत्मनिर्भरता विकसित करने की क्षमता को बढ़ाया जा रहा है। यह एकजुटता और सामूहिकता पर जोर देता है। समूह या समुदाय समुदाय और निर्णय लेने वाले तक पहुंच प्राप्त करने के लिए एक साथ काम करते हैं जहां उनके जीवन की गुणवत्ता निर्धारित होती है। विकास संवर्धन की एक प्रक्रिया है।

गांधीजी के महिला सशक्तिकरण संबंधी प्रमुख विचार

महिलाओं की आत्मनिर्भरता: गांधीजी ने महिलाओं को आर्थिक और शारीरिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने पर जोर दिया। उन्होंने खादी और कुटीर उद्योग को महिलाओं के लिए रोजगार के साधन के रूप में बढ़ावा दिया।

शिक्षा: महिलाओं की शिक्षा को गांधीजी ने सबसे महत्वपूर्ण साधन माना। उनका कहना था, "यदि एक पुरुष शिक्षित होता है, तो केवल एक व्यक्ति शिक्षित होता है, लेकिन यदि एक महिला शिक्षित होती है, तो एक पूरा परिवार शिक्षित होता है।"

समानता का सिद्धांत: गांधीजी ने स्त्री और पुरुष के बीच समानता पर बल दिया। उन्होंने पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था की आलोचना करते हुए महिलाओं के अधिकारों और सम्मान की वकालत की।

अहिंसात्मक प्रतिरोध और नेतृत्व: गांधीजी ने महिलाओं को स्वतंत्रता संग्राम के दौरान अहिंसात्मक आंदोलन का नेतृत्व करने के लिए प्रेरित किया। उनकी दृष्टि में महिलाएं करुणा, त्याग और साहस की प्रतीक थीं।

निष्कर्ष

महात्मा गांधी ने महिलाओं को सशक्त और समान बनाने के लिए समाज में क्रांतिकारी बदलाव लाने का प्रयास किया। उनकी शिक्षा, समानता, और आत्मनिर्भरता की दृष्टि आज भी प्रासंगिक है। यह अध्ययन बताता है कि गांधीजी के विचार न केवल ऐतिहासिक महत्व रखते हैं, बल्कि आधुनिक

समाज में महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक स्थिति को सुधारने में भी मार्गदर्शक हैं।

संदर्भ

1. अनुराधा, वी. (2016) महिला उत्थान पर गांधीवादी विचार-एक विश्लेषणात्मक अध्ययन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंजीनियरिंग साइंस एंड कंप्यूटिंग, 6 (5), 5918-5921।
2. बंसल, एस. (2016, 02 दिसंबर) भारत महिला साक्षरता में पीछे है। 15 अप्रैल, 2018 को <http://www.thehindu.com> से प्राप्त किया गया: <http://www.thehindu.com/data/India-falls-short-in-female-literacy/article16080505.ece>
3. बोस, एन. के. गांधी से चयन (गांधी के विचारों का विश्वकोश) अहमदाबाद, भारत: जी. टी. देसाई नवा जी वनमुद्रा नालया। जनगणना 2011.co.in. (n.d.)।
4. भारत में लिंग अनुपात। 14 अप्रैल, 2018 को पुनःप्राप्त, <https://www.census2011.co.in>: <https://www.census2011.co.in/sexratio.php>
5. दुबे, टी. (2016, 24 जून) अपने अधिकारों को जानें: 10 कानून जो महिलाओं और उनके अधिकारों की रक्षा करते हैं। 14 अप्रैल, 2018 को पुनःप्राप्त, <https://yourstory.com> से: <https://yourstory.com/2016/06/laws-that-protect-women-rights/> edugeneral.org. (2017, 03 अगस्त)। भारत में महिला अधिकार: संवैधानिक अधिकार और कानूनी अधिकार। 14 अप्रैल, 2018 को <https://edugeneral.org> से प्राप्त किया गया
6. गाराई, एस. (2015) गांधी ऑन वूमैन इमैनेसिपीशन। प्र तिधवानी द इको, 4 (1), 105-109.
7. महिला सशक्तिकरण योजना। 14 अप्रैल, 2018 को <http://www.wcd.nic.in>: <http://www.wcd.nic.in/schemes-listing/2405> से प्राप्त किया गया
8. कपड़िया, एस. (n.d.) महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि: महिलाओं और सामाजिक परिवर्तनों पर उनके विचार। 13 अप्रैल, 2018 को www.mkgandhi.org से प्राप्त किया गया
9. कौर, आर. ए. (n.d.) गांधीजी और महिलाएं। 13 अप्रैल, 2018 को www.mkgandhi.org से प्राप्त किया गया: <https://www.mkgandhi.org/articles/kaur.htm>
10. खेतरपाल, एस. (2017, 24 फरवरी) सकल घरेलू उत्पाद में भारतीय महिलाओं का योगदान वैश्विक औसत के आधे से भी कम है: मैकिन्से का अध्ययन।
11. कृपलानी, जे.पी. (1970) गांधी उनका जीवन और विचार। (आर.आर. दिवाकर, सं.) प्रकाशन प्रभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार।
12. कुमार, डी. (2017, 03 जून) समकालीन भारत में महिलाओं के सामाजिक-आर्थिक मुद्दे। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च।
13. मॉडल, पी. (n.d.) महात्मा गांधी के महिलाओं पर विचार। 12 अप्रैल, 2018 को <http://www.yourarticlelibrary.com> से प्राप्त: <http://www.yourarticlelibrary.com/mahatma-gandhi/mahatma-gandhi-views-on-women/38474>

14. नंदेला, के. (n.d.) महिला सशक्तिकरण पर गांधी। 13 अप्रैल, 2018 को www.mkgandhi.org/articles/womens_empowerment.htm
15. पांडा, डी. (2017) भारत में महिला सशक्तिकरण: तर्कसंगतता और वर्तमान स्थिति। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इमर्जिंग रिसर्च इन मैनेजमेंट एंड टेक्नोलॉजी, 6 (9), 169-175.
16. सैन, आर. (2016) महिलाओं के प्रति गांधीवादी दृष्टिकोण. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एप्लाइड सोशल साइंस, 3 (5 और 6), 150 - 155.
17. संदीप. (2018, 6 फरवरी) महिला सशक्तिकरण: लेख, निबंध, महत्व, अधिकार और आवश्यकता. 11 अप्रैल, 2018 को www.iaspaper.net